* दर्शनशास्त्र का स्वरूप —

दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम सत्य और सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिये एक दृष्टिकोण है। दार्शनिक चिन्तन मूलतः जीवन की अर्थवत्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व तथा समाज और मानव चिंतन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है।

दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है। व्यापक अर्थ में दर्शन, तर्कपूर्ण, विचिपूर्वक एवं क्रमबद्ध विचार की कला है। इसका जन्म अनुभव एवं परिस्थिति के अनुसार होता है। यही कारण है कि संसार के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने समय समय पर अपने-अपने अनुभवों एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवन दर्शन को अपनाया।

भारतीय दर्शन का इतिहास अत्यंत पुराना है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी अर्जित दर्शन है इसके जड़ तक जाना असम्भव है किन्तु पश्चिमी फिलॉसफी के अर्थों में दर्शनशास्त्र का पद

प्रयोग सर्वप्रथम पाइथागोरस ने लिखित रूप
से किया था। विशिष्ट अनुशासन और विज्ञान
के रूप में दर्शन को प्लेटो ने विकसित किया
था। उसकी उत्पति दास स्वामी समाज में
एक ऐसे विज्ञान के रूप में हुई जिसने वस्तु
गत तथा स्वयं अपने विषय में मनुष्य के ज्ञान
के सकल योग को ऐक्यबद्ध किया था। यह
मानव इतिहास के आरम्भिक सोपानों में
ज्ञान के विकास के निम्न स्तर के कारण
सर्वथा स्वाभाविक था। सामाजिक उत्पादन के
विकास और वैज्ञानिक ज्ञान के संचय की
प्रक्रिया में भिन्न भिन्न विज्ञान दर्शनशास्त्र से
पृथक होते गये और दर्शनशास्त्र का एक
स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित होने लगा।
जगत के विषय में सामान्य दृष्टिकोण का
विस्तार करने तथा सामान्य आधारों व नियमों
का करने, यथार्थ के विषय में चिंतन की तर्क
बुद्धिपरक, तर्क तथा संज्ञान के सिद्धांत विकसित
करने की आवश्यकता से दर्शनशास्त्र का एक
विशिष्ट अनुशासन के रूप में जन्म हुआ।
पृथक विज्ञान के रूप में दर्शन का आधारभूत
प्रश्न स्वत्व के साथ चेतना के संबंध की
समस्या है।